आरती – हनुमानजी की
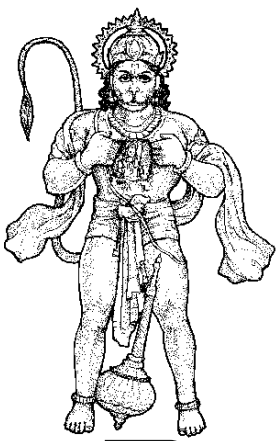
आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपे, रोग–दोष जाके निकट न झाँके।।
अंजनि–पुत्र महा बलदाई, संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सीया सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे, सियारामजी के काज सँवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे, आनि सजीवन प्रान उबारे।।
पैठि पाताल तोरि जम कारे, अहिरावण की भुजा उखारे।।
बायें भुजा असुर दल मारे, दाहिने भुजा संतजन तारे।।
सुर नर मुनि जन आरती उतारें, जै–जै–जै हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई, आरति करत अंजना माई।।
जो हनुमान (जी) की आरति गावै, बसि बैकुंठ परमपद पावै।।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई, तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।।
आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।